कॉन्ताँ ग्रेबाँ

बरास्ता तरबूज़

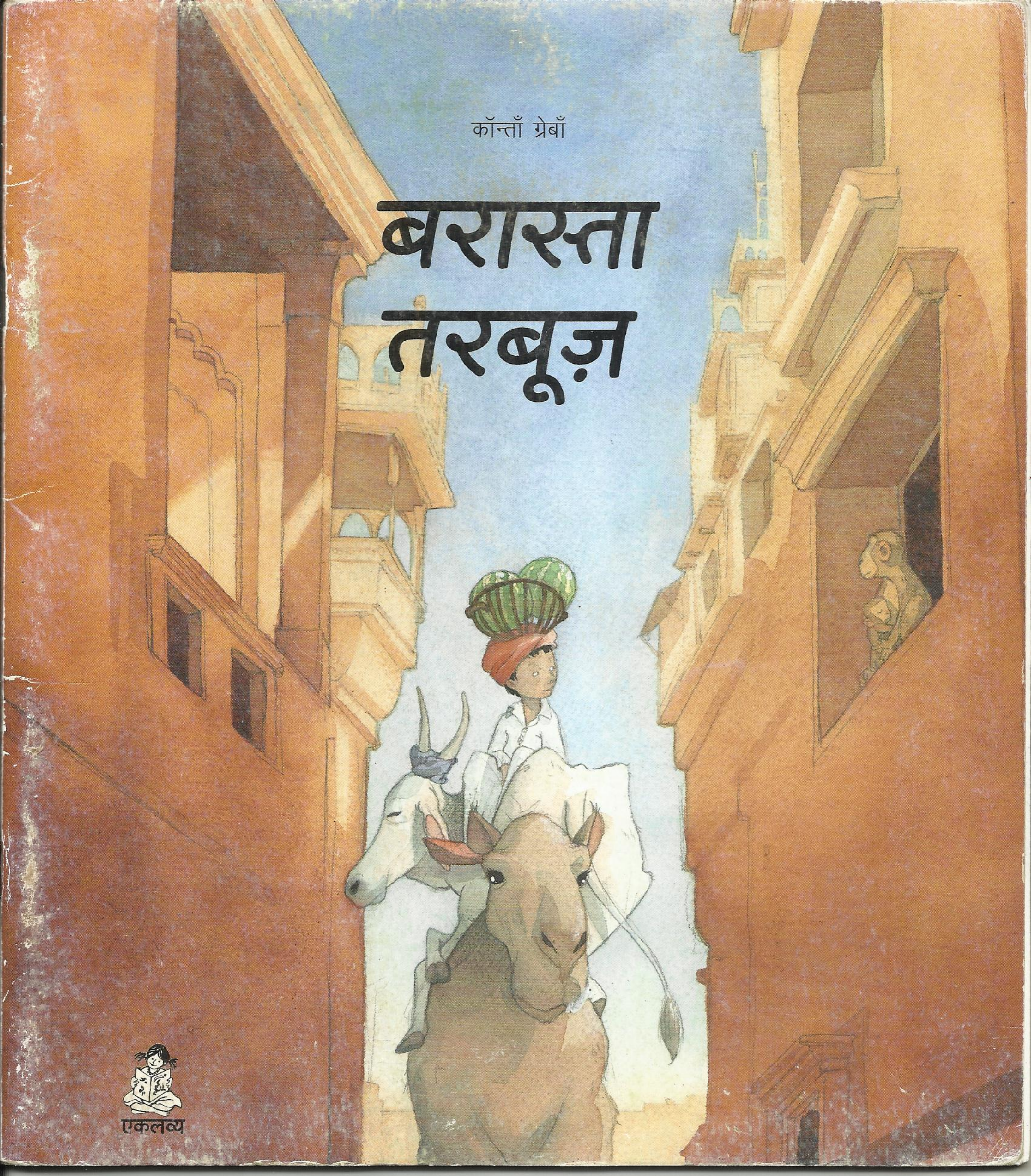

एकलव्य

फ्रेडरिक, लुक, ज़ेवियर और रीटा के लिए,
– कॉन्ताँ ग्रेबाँ

बरास्ता तरबूज़
BARASTA TARBOOZ
कहानी व चित्रः कॉन्ताँ ग्रेबाँ
अँग्रेज़ी से अनुवादः शिवनारायण गौर

Originally published as 'La route des Pastèques'
by Mijade Publications
Text and illustrations © 2008 Quentin Gréban
हिन्दी अनुवाद © 2011 एकलव्य

मार्च 2011 / 5000 प्रतियाँ
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो और 250 gsm सफ़ायर बोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
मूल्यः ₹ 60.00

प्रकाशकः ज्योत्स्ना प्रकाशन
430-31, शनिवार पेठ, पुणे - 411030
ज्योत्स्ना प्रकाशन द्वारा केवल एकलव्य के लिए प्रकाशित
सम्पर्कः एकलव्य
ई-10, शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म. प्र.)
फोनः (0755) 2550976, 2671017
फैक्सः (0755) 2551108
www.eklavya.in
सम्पादकीयः books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

मुद्रकः युनिक ऑफसेट, पुणे - 411041

ISBN: 978-81-7925-273-4

खुशी

कॉन्ताँ ग्रेबाँ

बरास्ता तरबूज़

एकलव्य

आज सुबह, पिता के साथ बाज़ार जाते हुए सासौ ने देखा किसी खास जने को।
आज सुबह, सासौ ने देखी... एक लड़की!
यह तो तय है। आज से सासौ को प्यार हो गया है।

पर उसका ध्यान सासौ पर कैसे जाएगा?
वह उसे कैसे खुश करेगा? क्या करे वह?
सासौ को पक्का पता है कि लड़कियों को उपहार पसन्द हैं।
तो सासौ उसके लिए अपनी फसल में से दस सबसे खूबसूरत तरबूज़ चुनता है।
एक प्यारी लड़की के लिए यह एक अनोखा उपहार होगा।
वह एक टोकरी में तरबूज़ जमाता है। और उसे सिर पर सम्हाल लेता है।
यह थोड़ा भारी है, पर सासौ को प्यार है, और प्यार में तो वह इससे भी बड़ा बोझा उठा लेगा।

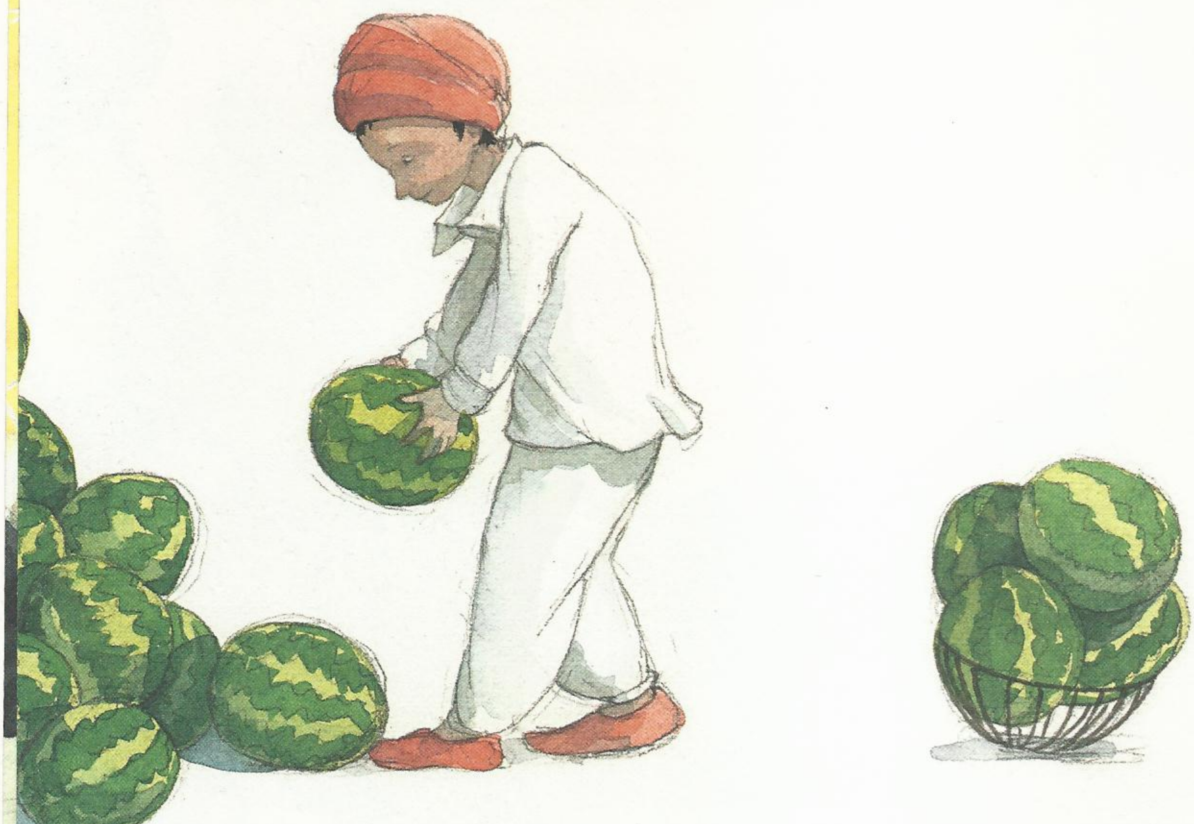

तो सासौ अपनी उड़ान भरता है। उसकी प्रेमिका शहर के दूसरी ओर रहती है। वह जगह दूर है। पर सासौ ने तो अभी से उससे मिलने के बाद की कल्पना कर ली है। जब वह इस शानदार उपहार को देखेगी तो क्या करेगी! वह निश्चित ही उसे चूमने के लिए उसकी बाँहों में उछल जाएगी...। सासौ को इसमें कोई सन्देह नहीं है: लड़कियाँ, वे रूमानी होती हैं!

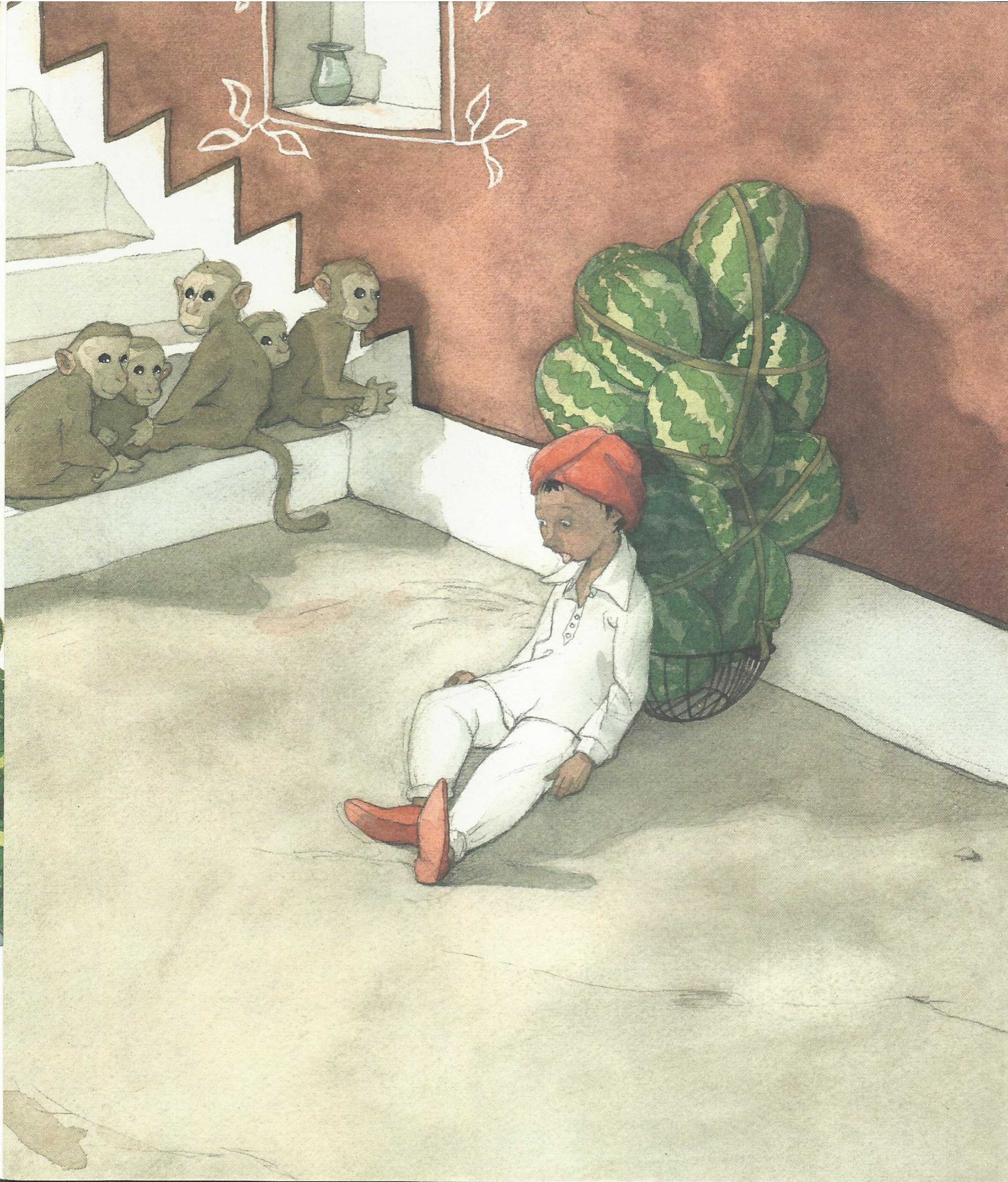

पर रास्ता लम्बा है, और सूरज सिर पर चढ़ आया है।
सासौ थक गया है, वह धीमा होता है और फिर थोड़ी देर के लिए रुक ही जाता है।
तभी वह देखता है कि एक व्यापारी अपनी गाय पर इतराता हुआ चला जा रहा है।
"मुझे इसी की ज़रूरत है," सासौ सोचता है।

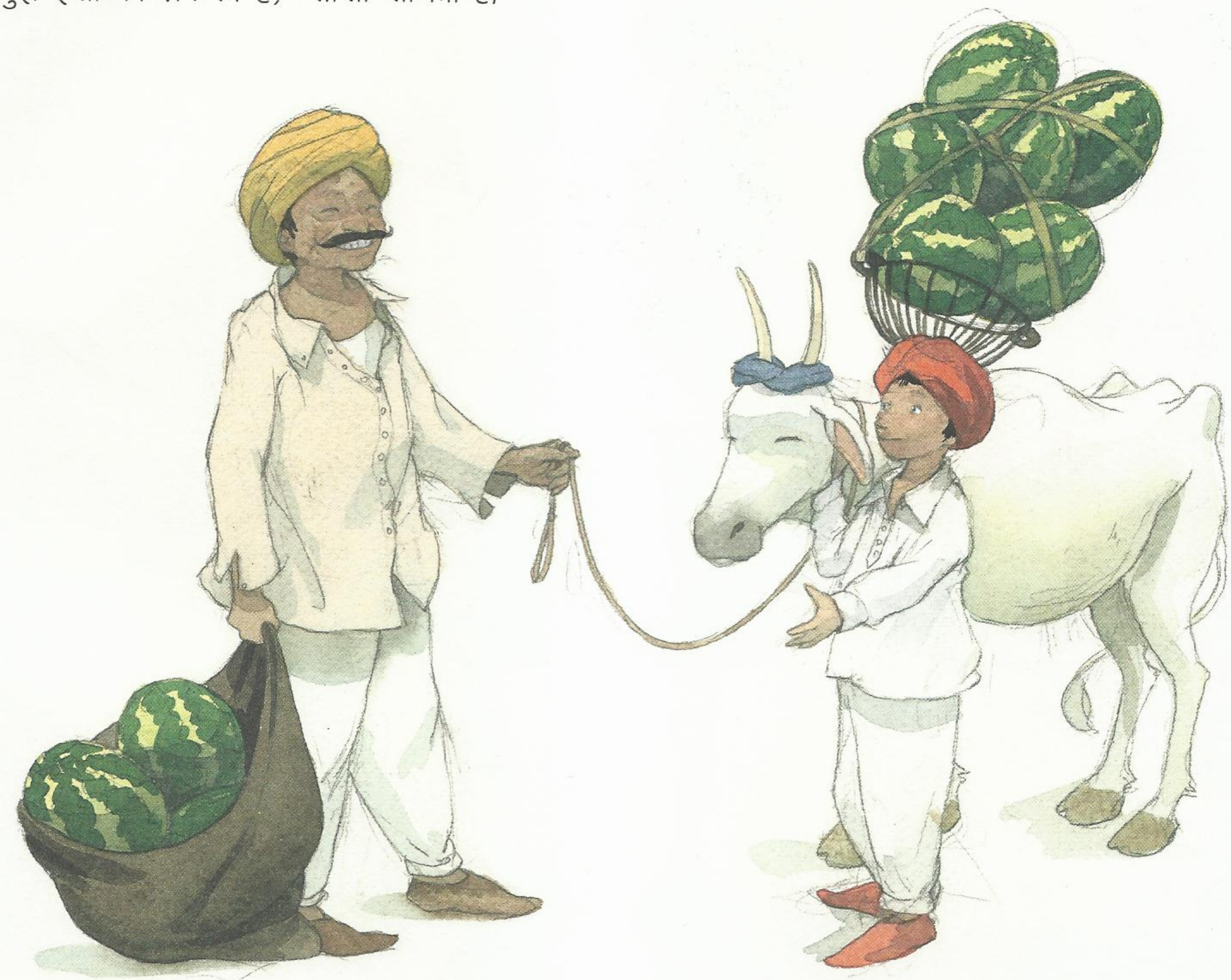

वह चार तरबूज़ों के बदले गाय ले लेता है।
"अभी तो मेरे पास छह तरबूज़ और हैं," वह अपने आप से कहता है, "और ये पर्याप्त होंगे।"

सासौ बहुत सावधानी से गाय पर चढ़ता है ताकि टोकरी गिर ना जाए, और आगे चलता है।

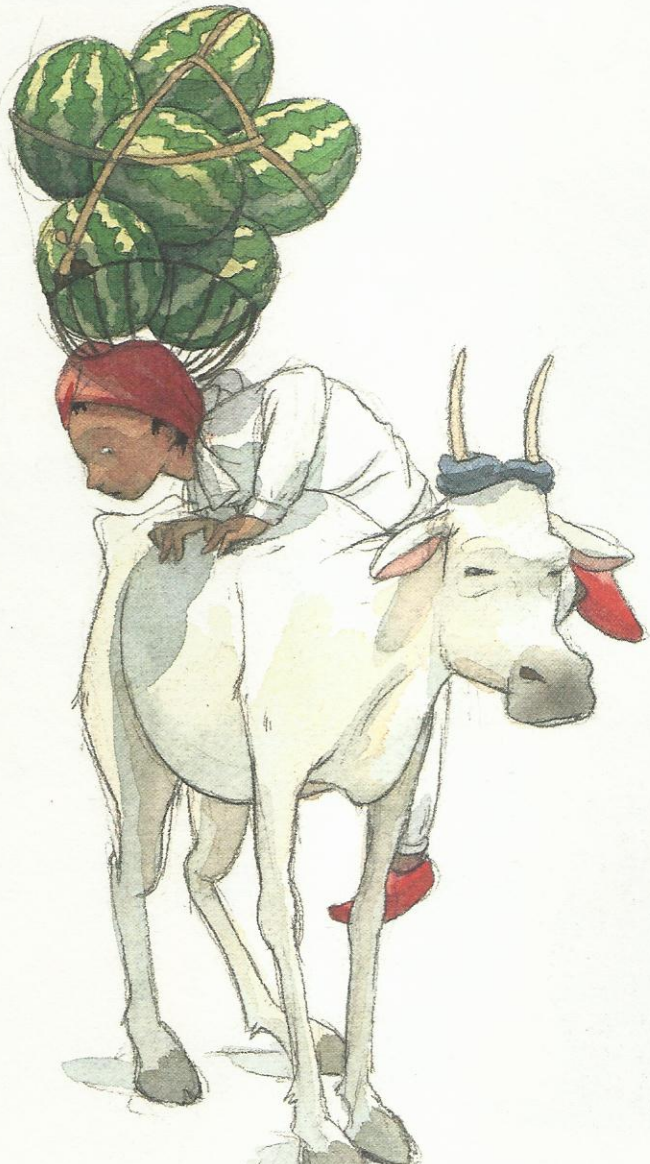

वह उस लड़की के बारे में सपना देखता है...
"वह ज़रूर ही तरबूज़ की एक बड़ी फाँक काटेगी और फिर हम दोनों उसे आजू-बाजू गप-गप खाएँगे, सच्चे प्रेमियों की तरह।"
सासौ को भरोसा है: लड़कियाँ, वे खूब खाऊ होती हैं!

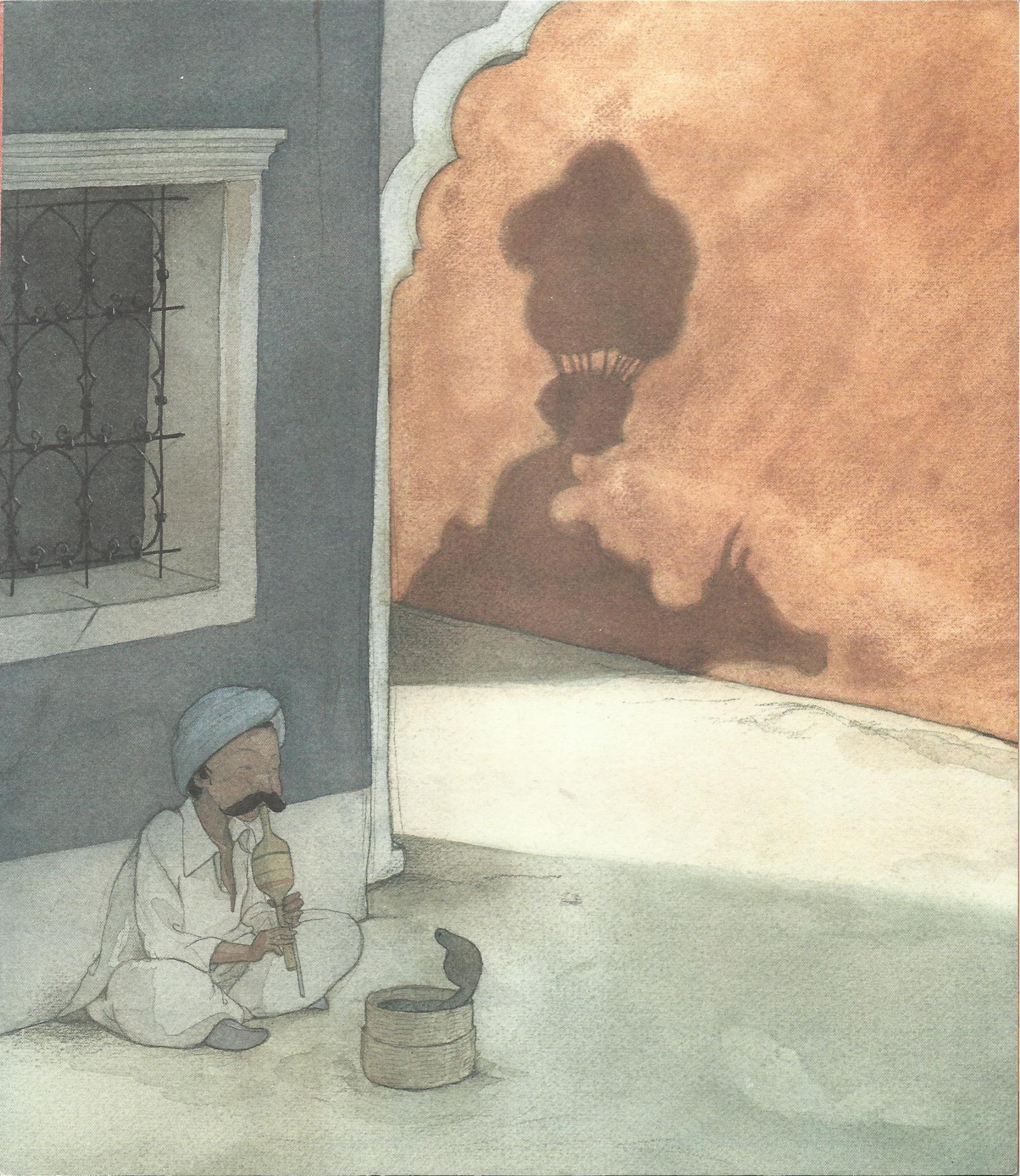

सड़क घुमावदार है, दोनों तरफ घर हैं। गाय धीरे-धीरे चलती है। सूरज की गर्मी अब जला रही है।
इस भरी दोपहरी में तरबूज़ों और सासौ को ढोना मुश्किल है!
जब गाय सुस्ताती है, उसी समय वहाँ से एक ऊँट गुज़रता है।

उसे गर्मी और प्यास की कोई चिन्ता नहीं। सासौ चार तरबूज़ के बदले ऊँट ले लेता है।
"मेरे पास अब भी दो तरबूज़ हैं। इतने पर्याप्त होने चाहिए," वह सोचता है।

वह थकी हुई गाय को ऊँट की पीठ पर चढ़ाता है। और तरबूज़ों की टोकरी लिए खुद भी बैठता है।

सब ठीक है। सासौ फिर अपने प्यार के बारे में सोचता है...
"जब वह मेरे ये तरबूज़ देखेगी तो खुशी से चहक उठेगी," वह अपने आपसे कहता है।
सासौ को पक्का है: लड़कियाँ, वे बहुत संवेदनशील होती हैं!

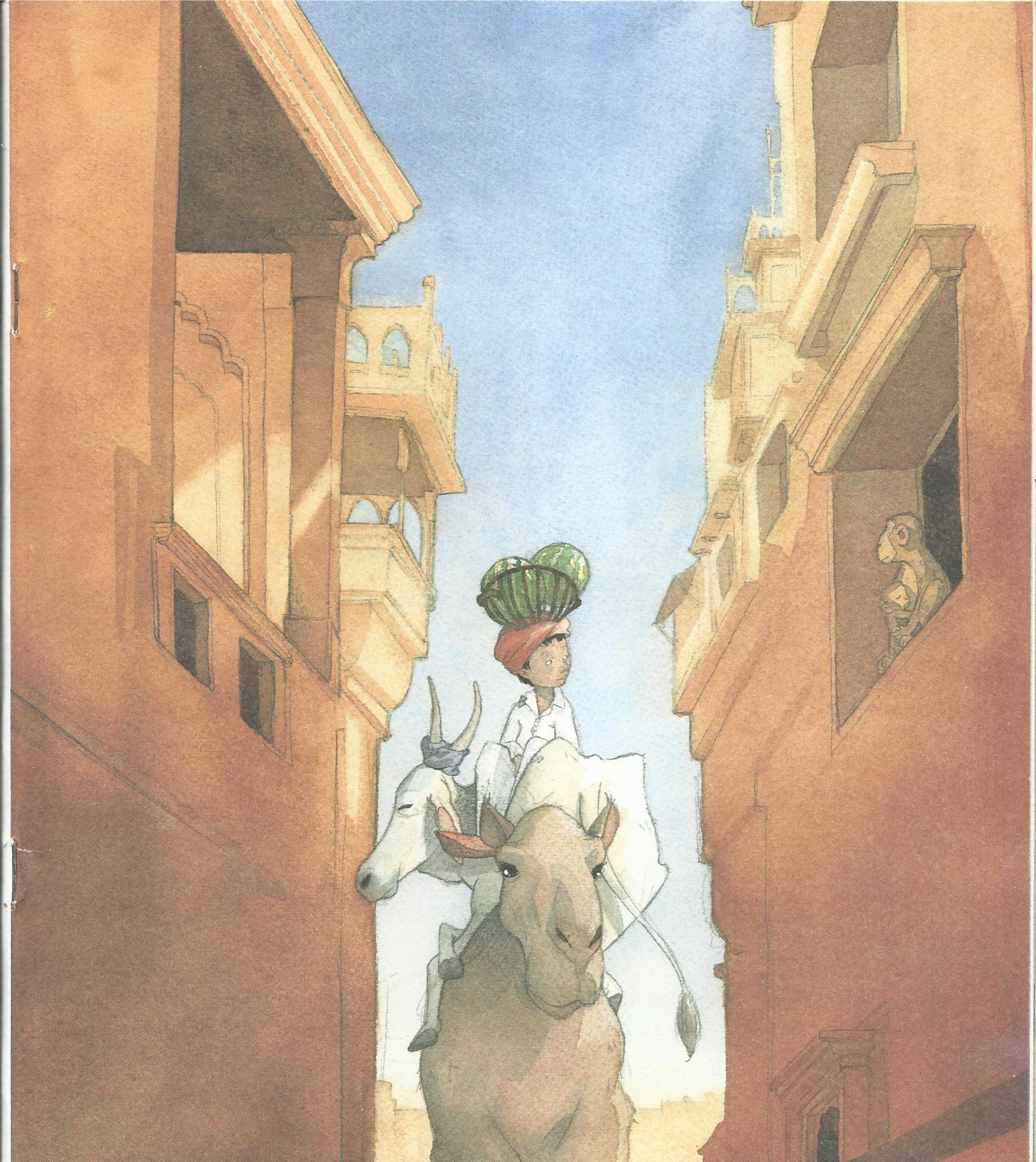

लेकिन, ऊँट जो सधी चाल से बढ़ रहा था, थकने लगा है। हालाँकि वह भारी वज़न ढोने और रेगिस्तान में चलने में माहिर है, फिर भी यह उसके लिए कुछ ज़्यादा ही है। वह भी आखिरी दम रुक जाता है।

संयोग से प्रेमी हमेशा भाग्यशाली होते हैं। सासौ को एक बूढ़ा कमज़ोर हाथी दिखता है। वह एक तरबूज़ में उसे खरीदता है। "मेरे पास अब भी एक तरबूज़ है," वह सोचता है, "यह एक छोटा उपहार है, लेकिन यह भी क्या कम है।"

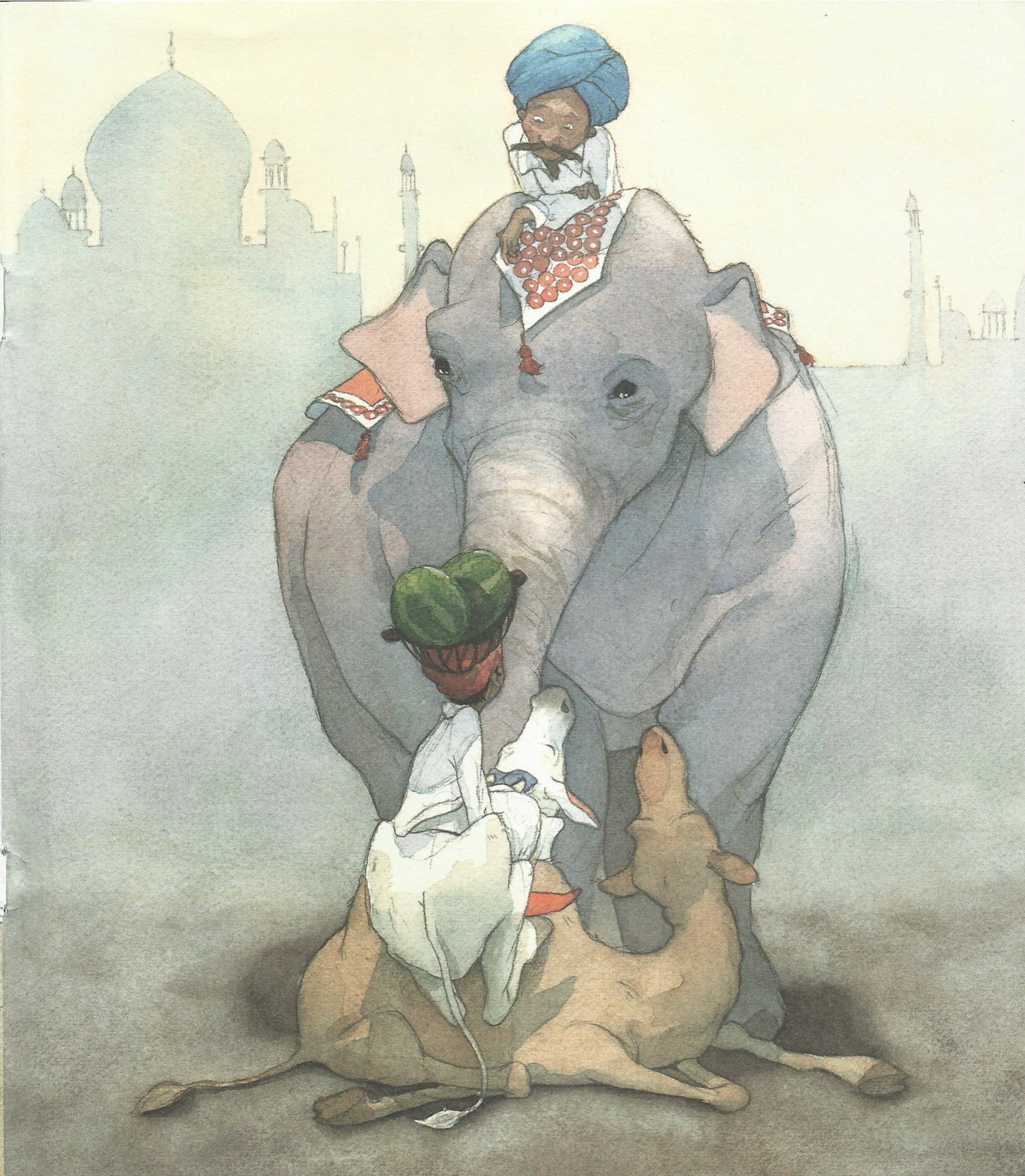

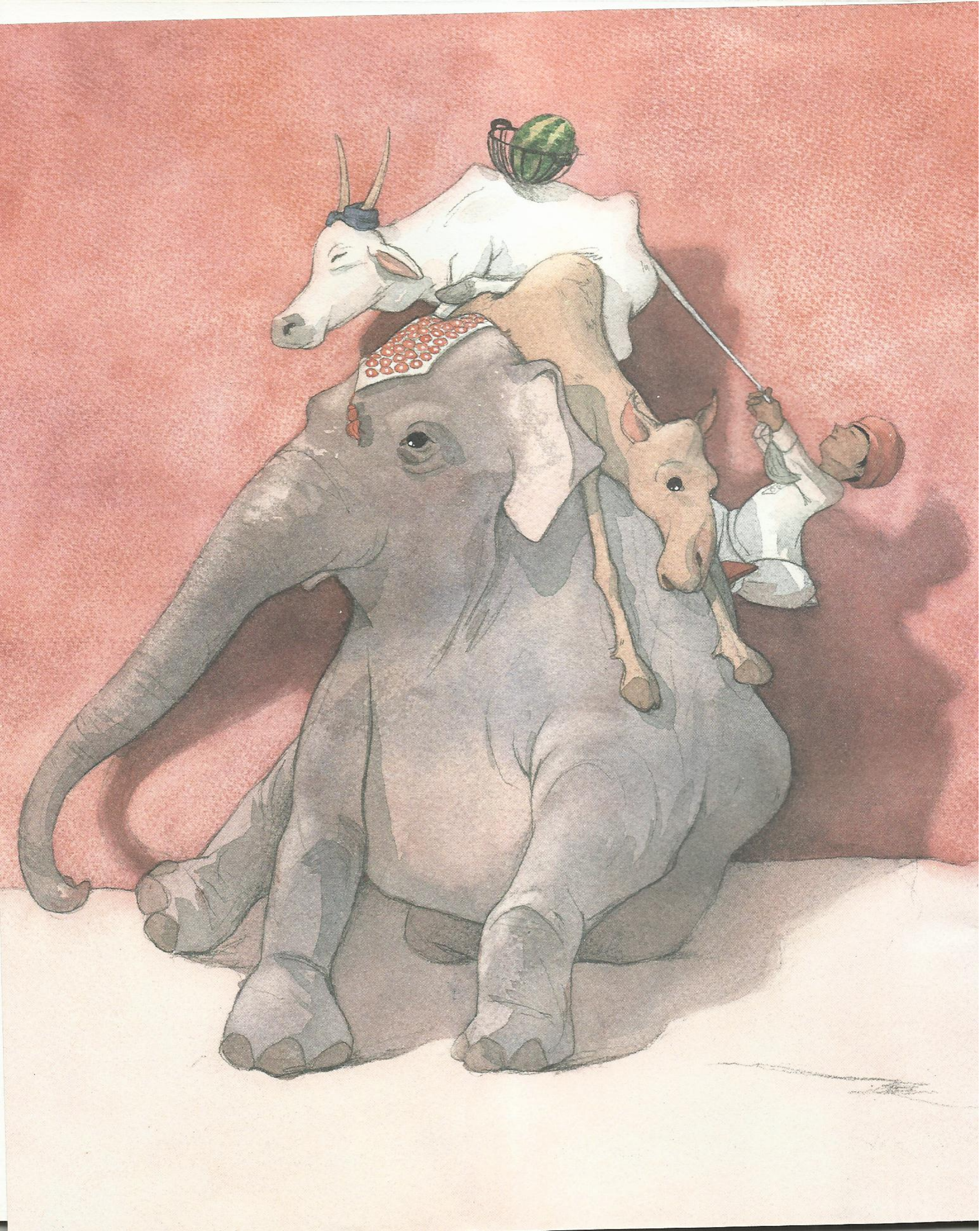

वह हाथी पर अपने थके हुए ऊँट को चढ़ाता है – ऊँट, जो अब
बिलकुल भी नहीं चल सकता। फिर बहुत प्यासी गाय को,
अपने आपको और अपने सिर पर इकलौते तरबूज़ को।
उम्र के बावजूद बूढ़ा हाथी सबको लेकर डग भरता है।
और सासौ फिर से सपनों में खो जाता है...
"जब उसकी नज़रें इस सुन्दर तरबूज़ पर पड़ेंगी,
वह लहराकर मेरी बाँहों में आ जाएगी।"
सासौ को पता है: लड़कियाँ, वे कोमल होती हैं!

सासौ अब अपने लक्ष्य के बहुत करीब है। पर सूरज तो आग बरसा रहा है। और वज़न इतना है कि हाथी भी अचानक गिर पड़ता है।

सासौ उन्हें कैसे छोड़ सकता है जिन्होंने उसे इतनी दूर लाने में मदद की है। वह अपनी पूरी ताकत जुटाकर सब कुछ अपनी पीठ पर लाद लेता है। अब आखिर की कुछ ही गलियाँ बची हैं।

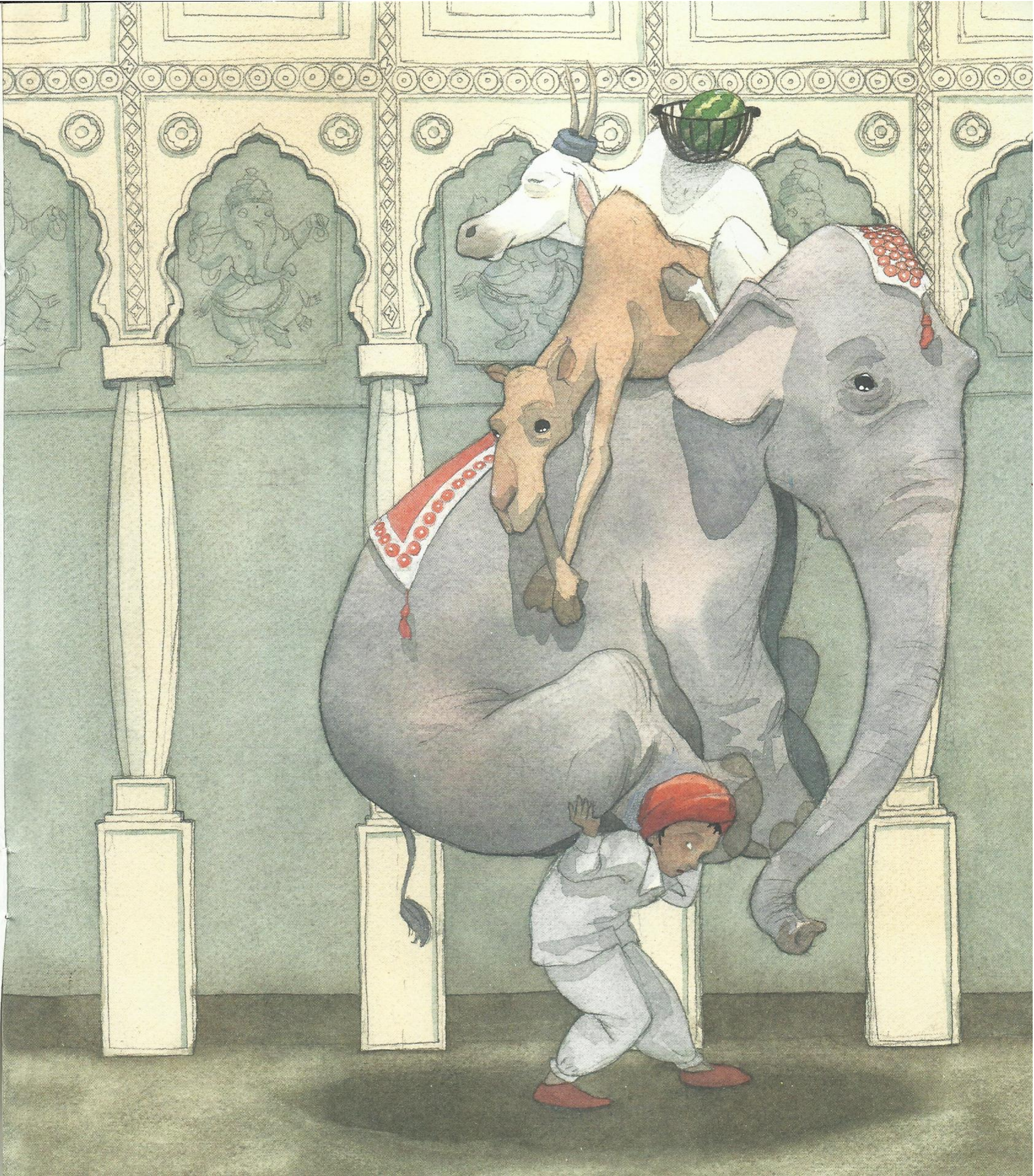

सासौ ने अपने जीवन में इतनी कड़ी
मेहनत कभी नहीं की है।
उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा है।
वह बहुत प्यासा है,
और अब खुद को रोक नहीं सकता...
वह आखिरी तरबूज़ को खा जाता है!

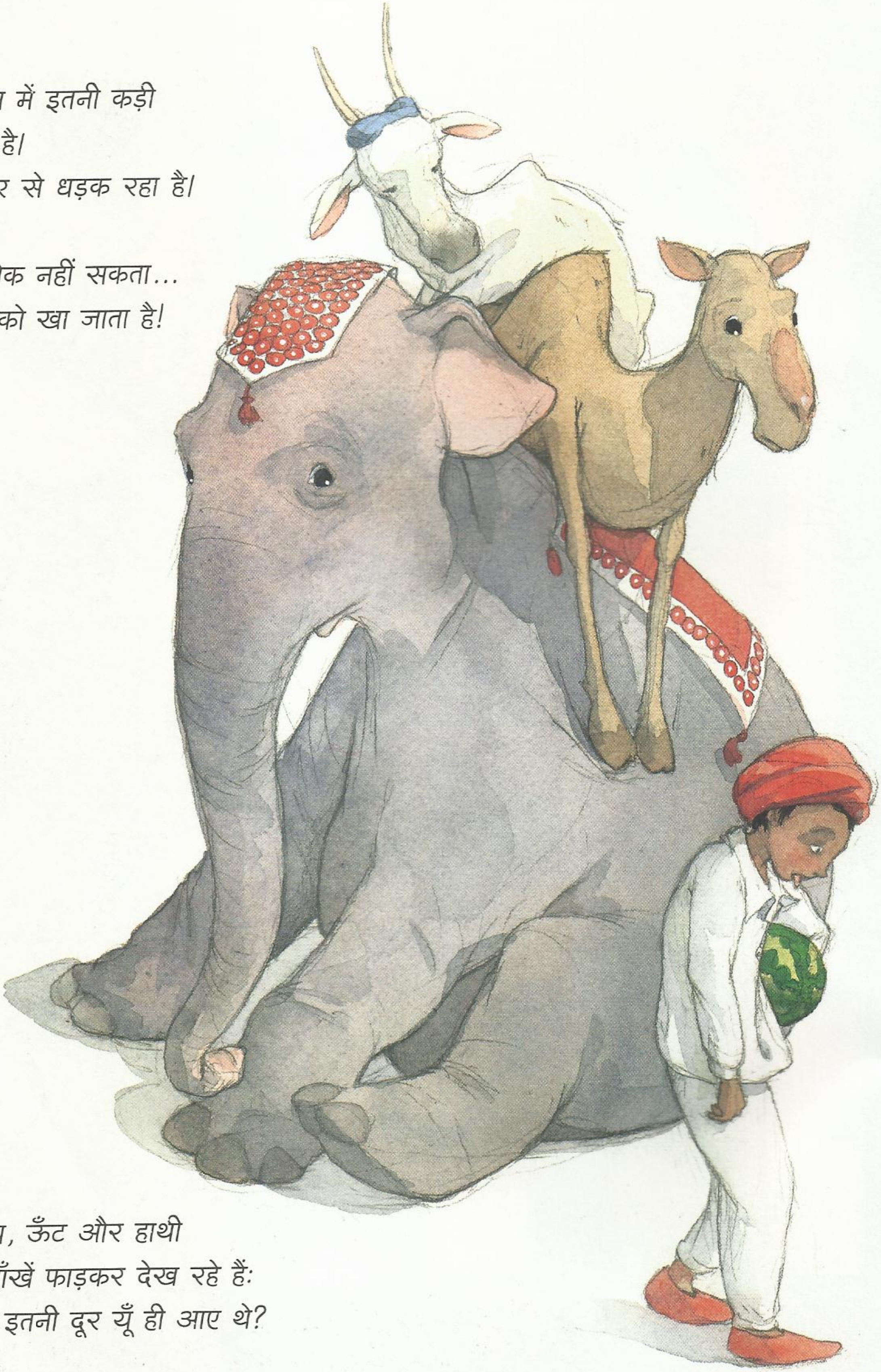

कैसा अनर्थ है! गाय, ऊँट और हाथी
सभी आश्चर्य से आँखें फाड़कर देख रहे हैं:
क्या वे उसके साथ इतनी दूर यूँ ही आए थे?

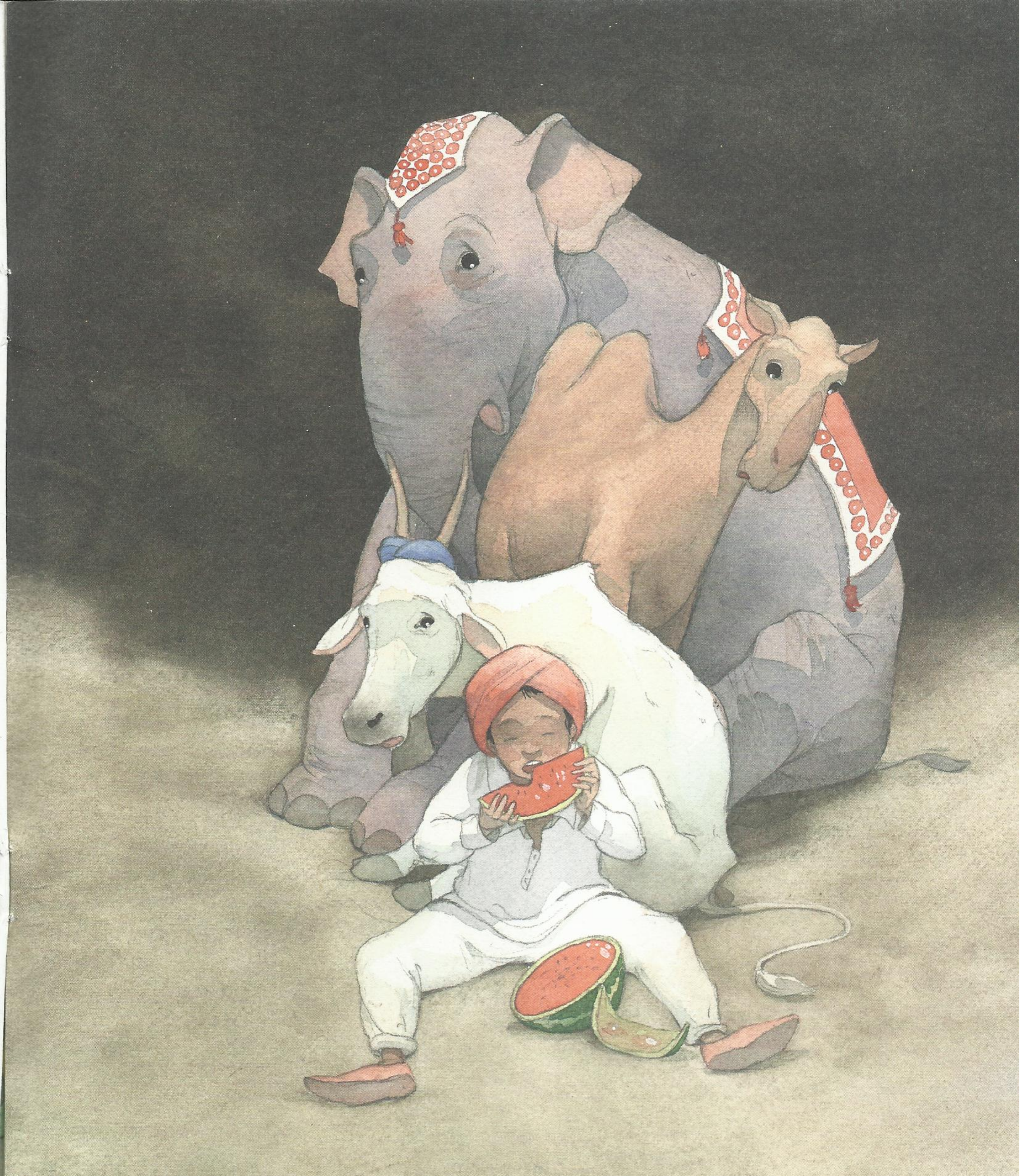

अब जब सासौ अपनी प्यास बुझा चुका है, वह अच्छा महसूस कर रहा है।
तरबूज़ खत्म हो गया है, तो ऐसा ही सही! वह एक नई तरकीब भिड़ाएगा।
जल्द ही सारे जानवर उसे एक कोने में व्यस्त देखते हैं।
वह कुछ कर रहा है। पक्के तौर पर। सारे जानवरों में कौतूहल है!

थोड़ी देर बाद सासौ अपनी प्रेमिका के घर का दरवाज़ा खटखटाता है।
वह विश्वास से भरा हुआ है, लेकिन जब वह बाहर आती है, बिलकुल आमने-सामने,
तब सासौ एक शब्द भी नहीं बोल पाता।

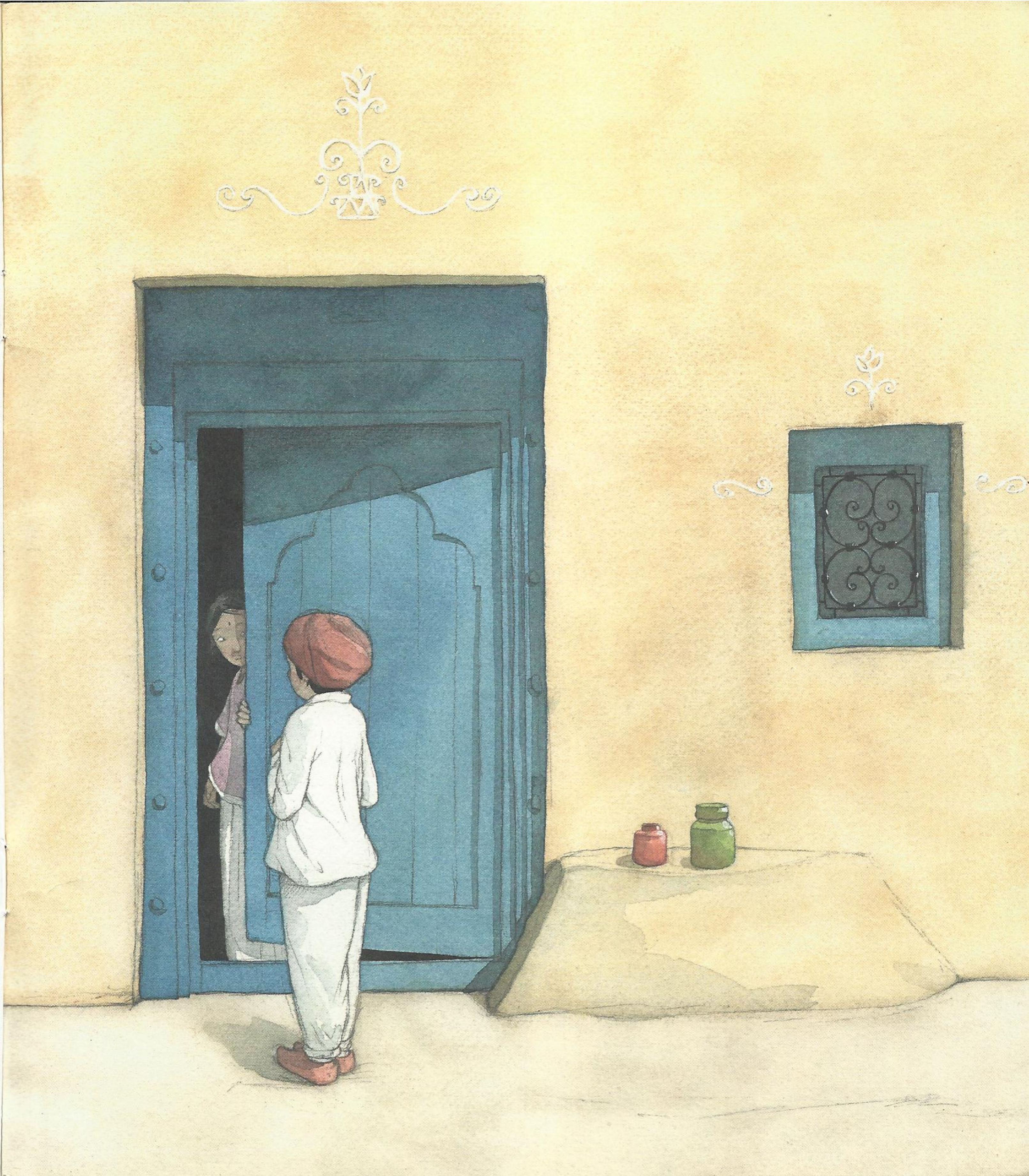

वह बस अपना उपहार उसे थमा देता है।
यह एक गज़ब की माला है। तरबूज़ के बीजों से बनी माला!
सासौ जानता है: लड़कियाँ, वे बहुत प्यारी होती हैं!
वह खुशी से झूमकर माला अपने गले में डाल लेती है।
और फिर सासौ को देती है सबसे खूबसूरत उपहार: एक चुम्मी।
सासौ शर्म के मारे लाल हो जाता है। यह देखकर उसकी प्रेमिका खिलखिलाती है...
लड़कियाँ जानती हैं: लड़के, वे शर्मीले होते हैं।

9 788179 252734

एकलव्य

मूल्यः ₹ 60.00

A0147H

parag SRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित